

---

brahmasUtraM

ब्रह्मसूत्रम्

Document Information

---

Text title : brahmasUtram

File name : brahmasUtramVS.itx

Category : major\_works, vAsudevAnanda-sarasvatI, vedanta, sUtra

Location : doc\_z\_misc\_major\_works

Author : vAsudevAnandasarasvatI TembesvAmi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Description-comments : From stotrAdisangraha

Latest update : December 31, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 24, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

ब्रह्मसूत्रम्



चित्तूलजातं यद्दु चित्तवृत्तं त्रिवृद्धं येन च भूतजातम् ।  
यत्पूर्वजातं यद्दु नैव जातं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ १ ॥

त्रिलोकसूत्रं भवतु यत्सुमन्त्रं त्रिवृत्तगात्रं नवदेवमात्रम् ।  
यद्वै त्रिमात्रं यदनन्तमात्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ २ ॥

प्रजापतेर्यत्भुवु पूर्वजातं यज्ञोपवीतं सलजातमास्तम् ।  
सत्त्वेन मुक्तं त्रिगुणेन शक्तं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ३ ॥

दक्षोद्धृतं येद्यद्दु विधिसूत्रं सदा पवित्रं प्रकरोति सूत्रम् ।  
ओनोलवित्रं भजतैकपात्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ४ ॥

यद्ब्रह्मसूत्रं यद्दु वस्तुतन्त्रं यतः स्वतन्त्रं परतन्त्रयन्त्रम् ।  
तमाहुर्गुरोः परमं सुपुत्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ५ ॥

यमत्रिपुत्रं ब्रुवते पवित्रमसाध्वमित्रं डिल साधुमित्रम् ।  
अतीव चित्रं सुविचित्रगात्रं तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ६ ॥

अनन्यया सूत्रमिदं पवित्रं भक्त्या धृतं येत्सुविशुद्धगात्रम् ।  
भवेत्पवित्रात्स पवित्रं एव तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ७ ॥

स ब्राह्मणो यो मनसा बिभर्ति यद्वा नरो यो वयसा बिभर्ति ।  
यद्वाप्यदम्भः श्रवसा बिभर्ति तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ८ ॥

द्विजोऽपि येद्यैन विवर्जितः स यादाल एवास्य च धारणेन ।  
सद्ब्रह्मसूत्रात्वं भवतु डीनजातेस्तद्ब्रह्मसूत्रं द्विज धेज्यजातम् ॥ ९ ॥

नवसूत्रमहोरात्रं योऽत्रिपुत्रमयं द्विजः ।  
ब्रह्मसूत्रमिदं धत्ते स यातीह पवित्रताम् ॥ १० ॥

इति श्री परमपूजनीय श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं  
ब्रह्मसूत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Sunder Hattangadi

---



*brahmasUtraM*

pdf was typeset on March 24, 2024



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

